*निवल शून्य लक्ष्य प्राप्त करने के लिए धारणीय और हरित अवसंरचना वित्तपोषण को उत्प्रेरित करना**

श्री एम. राजेश्वर राव

विशिष्ट अतिथिगण, प्रतिभागियों, सहकर्मियों, देवियो और सज्जनो,

सर्वप्रथम, मैं आयोजकों को इस महत्वपूर्ण विषय पर अपने विचार साझा करने हेतु मुझे यहाँ आमंत्रित करने के लिए धन्यवाद देना चाहता हूँ। निवल-शून्य उत्सर्जन प्राप्त करने के लिए उत्प्रेरक के रूप में कार्यरत जलवायु जोखिम और हरित अवसंरचना वित्तपोषण को समय के साथ नीति-निर्माण के हाशिये से हटकर वैश्विक और राष्ट्रीय कार्यसूची की ओर केंद्र में बढ़ना होगा और ऐसे अवसरों से इस प्रयास में मदद मिलनी चाहिए।

जलवायु परिवर्तन एक ऐसी घटना है जिसे हम प्रतिदिन देख रहे हैं और जी रहे हैं। हर गुजरते वर्ष के साथ, मौसम के मिजाज की चरम सीमाएँ अधिक तीव्र होती जा रही हैं। चाहे वह अत्यधिक वर्षा हो, सूखा हो, लू हो या चक्रवात, परिवर्तन और विचलन आम बात हो गए हैं। संयुक्त राज्य अमेरिका में हीट डोम बनने की घटनाएँ या निर्धारित समय से पहले मुंबई में मानसून की बारिश का आना, जलवायु परिवर्तन के हालिया उदाहरणों को दर्शाते हैं। आने वाले समय में मौसम के मिजाज में बदलाव की संभावना और अधिक नियमित होने वाली है और इसका आर्थिक प्रभाव बहुत गंभीर होगा। चरम मौसम की घटनाओं की आर्थिक लागत पर एक हालिया रिपोर्ट[1] का अनुमान है कि 2014 से 2023 तक की दस वर्षों की अवधि में, जलवायु-संबंधी चरम मौसम की घटनाओं से जुड़ी आर्थिक लागत 2 ट्रिलियन डॉलर तक पहुँच गई। उल्लेखनीय है कि पिछले दो वर्षों, यानी 2022 और 2023, को मिलाकर अनुमानित लागत लगभग 451 बिलियन डॉलर थी। इसके अलावा, जलवायु-जनित आपदाएँ सबसे गरीब देशों और समुदायों को भी असमान रूप से प्रभावित करती हैं।

जलवायु परिवर्तन से उत्पन्न होने वाली घटनाओं के प्रभाव के पैमाने को देखते हुए, लचीलापन और शमन दोनों को सक्षम बनाने के लिए प्रौद्योगिकी और वित्त स्तर में बड़े पैमाने पर निवेश की आवश्यकता है। ओईसीडी रिपोर्ट[2] के अनुसार, 2050 तक हरित और धारणीय अवसंरचना के लिए आवश्यक निवेश लगभग 3 से 5 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर प्रति वर्ष होने का अनुमान है। यह केवल पूंजीगत संसाधनों का नाममात्र आवंटन नहीं है - इसके लिए वित्तीय प्रवाह में महत्वपूर्ण बदलाव, उपयुक्त नीतियों के साथ पूरक, और संस्थागत प्राथमिकताओं के पुनर्विन्यास की आवश्यकता होगी। अब सवाल यह नहीं है कि क्या, बल्कि यह है कि इस परिवर्तन को कैसे वित्तपोषित किया जाए, जो आगे बढ़ते हुए हमारा सामूहिक संकल्प होना चाहिए। धारणीय और हरित अवसंरचना का वित्तपोषण अब एक गौण चिंता नहीं रह सकता; इसे अब वैश्विक और राष्ट्रीय दोनों निवल-शून्य लक्ष्यों को प्राप्त करने और पेरिस समझौते की प्रतिबद्धताओं को पूरा करने के लिए केंद्रबिंदु बनना होगा। ये पहलू जलवायु जोखिम शमन और एक उचित संक्रमण की सुविधा के लिए महत्वपूर्ण हैं। जबकि दुनिया भर के 140 से अधिक देशों ने निवल-शून्य लक्ष्यों के लिये प्रतिबद्धताएँ की हैं। वास्तविक चुनौती उनकी उपलब्धि में निहित है। जलवायु वित्त अभी भी काफी हद तक ऑफ-ट्रैक, बिखरा हुआ है, सार्वजनिक धन पर अत्यधिक निर्भर है और अक्सर उन विकासशील देशों के लिए दुर्गम है जिन्हें इसकी सबसे ज़्यादा ज़रूरत है। इसलिए, हमारे सामने यह सवाल दोनों अर्थात ज़रूरी और स्पष्ट है कि निवल-शून्य के वादे को पूरा करने के लिए हम धारणीय और हरित अवसंरचना के वित्तपोषण को कैसे उत्प्रेरित करें? मैं इस पर कुछ विचार साझा करना चाहूँगा।

---

* भारतीय रिज़र्व बैंक के उप-गवर्नर श्री एम. राजेश्वर राव द्वारा 3 जुलाई को कृषि बैंकिंग महाविद्यालय, आरबीआई, पुणे में स्विस एजेंसी फॉर डेवलपमेंट एंड को-ऑपरेशन (एसडीसी) इंडिया के सहयोग से आयोजित हरित अवसंरचना वित्त सम्मेलन में उद्घाटन भाषण दिया गया। सुनील टी.एस. नायर और साकेत कुमार द्वारा दिए गए सुझावों के लिए हम आभार व्यक्त करते हैं।

[1] https://iccwbo.org/wp-content/uploads/sites/3/2024/11/2024-ICC-Oxera-The-economic-cost-of-extreme-weather-events.pdf

[2] https://www.oecd.org/en/publications/financing-climate-futures_9789264308114-en/full-report.html

धारणीय और हरित अवसंरचना - समय की आवश्यकता

जलवायु संबंधी अस्थिरता, सीमित संसाधनों और बढ़ती असमानता से पहचाने जानेवाले वर्तमान दौर में, धारणीय और हरित अवसंरचना एक अनिवार्य आवश्यकता बन सकती है। चाहे वह बिजली संयंत्रों, राजमार्गों, अपार्टमेंटों, वाणिज्यिक भवनों या ईंधन पाइपलाइनों के रूप में हो, अवसंरचना को कार्बन उत्सर्जन में निवल-शून्य के लक्ष्य को प्राप्त करने की दिशा में एक उपाय के रूप में लिया जाना चाहिए, न कि इन लक्ष्यों की प्राप्ति में बाधाओं के रूप में। विश्व बैंक के एक अध्ययन के अनुसार, जलवायु-अनुकूल अवसंरचना में निवेश किया गया प्रत्येक डॉलर चार डॉलर तक के नुकसान से बचा सकता है।[3] हरित और धारणीय अवसंरचना न केवल स्वच्छ वायु, सुलभ गतिशीलता और अधिक कुशल सार्वजनिक सेवाओं के माध्यम से जीवन की गुणवत्ता में सुधार करती है, बल्कि जलवायु के अनुकूल रहते हुए, भेद्यता और असमानता को कम करने में भी मदद करती है, विशेष रूप से उन समुदायों में जो जलवायु जोखिमों से ग्रस्त हैं। जलवायु-अनुकूल अवसंरचना का निर्माण आपदा जोखिमों को कम करता है और बाढ़, चक्रवातों और लू से होने वाले विनाशकारी नुकसान को रोकता है। यह भौतिक जलवायु जोखिमों के कारण कॉर्पोरेट तुलन पत्र पर होने वाले नुकसान की अस्थिरता को भी कम करता है, जिससे वित्तीय स्थिरता में सुधार होने में सहायता मिलती है। जलवायु परिवर्तन के प्रति अनुकूल अवसंरचना के पक्ष में तर्क तो दमदार हैं, लेकिन बाधाएँ भी कई हैं। यह अनुमान लगाया गया है[4] कि वैश्विक निवेश कोषों की कुल प्रबंधनाधीन आस्तियों (एयूएम) का 1.5% से भी कम हिस्सा पेरिस लक्ष्यों के अनुरूप है। उभरते बाजारों में हरित अवसंरचना पाइपलाइनें अभी भी अविकसित हैं और जलवायु वित्त का अंतर, जो अनुमानित रूप से प्रतिवर्ष 2.5 ट्रिलियन डॉलर से अधिक है, बढ़ता जा रहा है।

धारणीय एवं हरित अवसंरचना का वित्तपोषण - मुद्दे और चुनौतियाँ

धारणीय एवं हरित अवसंरचना पर चर्चा करते समय, पहला कदम हरित अवसंरचना क्या है, इस बात पर आम सहमति लेकर एक स्पष्ट परिभाषा स्थापित करना है। इस संबंध में हरित वर्गीकरण एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। सरकार ने हाल ही में सार्वजनिक परामर्श के लिए जलवायु वित्त वर्गीकरण का मसौदा जारी किया है, जो अर्थव्यवस्था और वित्तीय प्रणाली में अत्यंत आवश्यक एकसमान वर्गीकरण का मार्ग प्रशस्त करता है। इस वर्गीकरण के मसौदे में जलवायु वित्त से संबंधित वर्गीकरण के लिए चार आवश्यक मानदंड निर्धारित किए गए हैं जैसे ग्रीन हाउस गैस (जीएचजी) उत्सर्जन से बचाव, जीएचजी उत्सर्जन तीव्रता में कमी, जलवायु परिवर्तन के प्रतिकूल प्रभावों के जोखिम को कम करने वाले अनुकूलन समाधान और अनुसंधान एवं विकास। लेकिन धारणीय एवं हरित अवसंरचना को सक्षम बनाने की कुंजी प्रौद्योगिकी है। नई प्रौद्योगिकियां उत्सर्जन तीव्रता में कमी ला सकती हैं, ऊर्जा दक्षता बढ़ा सकती हैं, जीएचजी उत्सर्जन से बचने में मदद के लिए वैकल्पिक ऊर्जा स्रोत प्रदान कर सकती हैं, और जलवायु परिवर्तन के खतरों को कम करने की दिशा में अनुकूलन और लचीलापन बढ़ाने के लिए नवीन समाधान लेकर आ सकती हैं।

हालाँकि, प्रौद्योगिकी पर यह निर्भरता वित्त प्रवाह को सक्षम बनाने वाली और मुख्य बाधा दोनों है। मैं इसे थोड़ा विस्तार से समझाता हूँ। वित्त हमेशा जोखिम और प्रतिफल के सिद्धांत का पालन करता है। वित्तीय संस्थान वित्तीय उत्पादों के लिए जोखिम-आधारित मूल्य निर्धारण अपनाते हैं, जिसमें उधारकर्ता के जोखिम प्रोफ़ाइल और प्रस्ताव से जुड़े अंतर्निहित जोखिम, दोनों को ध्यान में रखा जाता है। धारणीय और हरित अवसंरचना की आधारभूत प्रौद्योगिकियाँ अभी भी विकसित हो रही हैं और इसलिए पारंपरिक प्रौद्योगिकियों की तुलना में अपनी भविष्य की व्यवहार्यता के संबंध में कम विश्वसनीय हैं, जो तुलनात्मक रूप से स्थिर हैं और नकदी प्रवाह सृजन के मामले में समय की कसौटी पर खरी उतरी हैं। इन विकसित हो रही प्रौद्योगिकियों को समझने में ऋणदाताओं के पास तकनीकी विशेषज्ञता और क्षमता का अभाव भी हो सकता है। इसलिए,

[3] https://www.worldbank.org/en/news/press-release/2019/06/19/42-trillion-can-be-saved-by-investing-in-more-resilient-infrastructure-new-world-bank-report-finds#:~:text=WASHINGTON%2C%20June%2019%2C%202019%20%E2%80%93,Reduction%20and%20Recovery%20(GFDRR).

[4] https://clarity.ai/research-and-insights/climate/only-1-5-of-global-investment-funds-are-aligned-with-a-1-5oc-scenario-and-none-are-aligned-when-scope-3-is-considered/

[5] https://www.un.org/en/climatechange/raising-ambition/climate-finance

पारंपरिक प्रौद्योगिकियों की तुलना में, धारणीय और हरित अवसंरचना प्रौद्योगिकियों से जुड़े अंतर्निहित जोखिम उच्च माने जाते हैं, जो उनके जोखिम मूल्य निर्धारण में परिलक्षित होते हैं। इस प्रकार, धारणीय और हरित परियोजनाओं को अक्सर पूंजीगत व्यय आवश्यकताओं सहित उच्च अग्रिम लागतों का सामना करना पड़ता है। धारणीय और हरित अवसंरचना से जुड़े कथित जोखिम प्रारंभिक चरण की प्रौद्योगिकियों के लिए ऋण वित्तपोषण तक पहुँच को सीमित करते हैं, जो अधिक इक्विटी निवेश (प्रथम हानि चूकता पूंजी) की आवश्यकता को उजागर करते हैं । अन्य बाधाएं लंबी चुकौती अवधि से संबंधित हैं, जिससे आस्ति-देयता में बेमेलता, सूचना अंतराल, मजबूत आश्वासन और सत्यापन कार्यों की कमी पैदा होती है, जो निवेश-ग्रेड अवसंरचना परियोजनाओं अर्थात, सुपरिभाषित नकदी प्रवाह, स्पष्ट अनुशासन और मापन योग्य प्रभाव मेट्रिक्स वाली परियोजनाओं को तैयार करने के लिए इन प्रौद्योगिकियों की समझ और मूल्यांकन को सीमित करती है।

जलवायु परिवर्तन के जोखिम वास्तविक अर्थव्यवस्था को सीधे प्रभावित करते हैं, और उससे वास्तविक अर्थव्यवस्था में अपने ऋण जोखिम के कारण वित्तीय क्षेत्र प्रभावित होता है। वित्तीय क्षेत्र के लिए एक व्यापक जोखिम मूल्यांकन करने के लिए, वास्तविक अर्थव्यवस्था यानी कॉर्पोरेट/संस्थागत उधारकर्ताओं से समय पर प्राप्त प्रासंगिक सूचना प्रवाह महत्वपूर्ण है। यह देखते हुए कि जलवायु परिवर्तन और जलवायु जोखिम बड़े पैमाने पर एमएसएमई, असंगठित क्षेत्रों और गैर-सूचीबद्ध कॉर्पोरेट्स वाले व्यवसाय क्षेत्र को प्रभावित करने की संभावना है, जलवायु परिवर्तन जोखिमों पर इन उधारकर्ताओं के बीच जागरूकता और समझ पैदा करना और आवश्यक जानकारी प्राप्त करना महत्वपूर्ण हो जाता है।

जलवायु परिवर्तन को समझना एक जटिल प्रक्रिया है जिसमें मौसम और जलवायु पैटर्न का विश्लेषण करके परिवर्तनों की भविष्यवाणी करने हेतु जटिल मॉडलों का उपयोग शामिल है। ऐतिहासिक आँकड़ों के साथ-साथ, वर्षा और तापमान जैसे जलवायु चरों के अनुमान भी भविष्योन्मुखी जोखिम अनुमानों के लिए इनपुट हैं। हालाँकि, वित्तीय प्रणाली या वित्तीय विश्लेषकों का जलवायु विज्ञान से परिचय सीमित है। साथ ही, जलवायु वैज्ञानिकों की वित्तीय मॉडलिंग और जोखिम अनुमानों की समझ भी सीमित है। इससे इन दोनों इनपुट धाराओं के बीच एक अंतर पैदा होता है और यह हमें धारणीय और हरित अवसंरचना वित्त से जुड़े जोखिमों का सटीक अनुमान लगाने में चुनौती देता है। वित्तीय विश्लेषकों के लिए निर्णय लेने में सहायता के लिए जलवायु संबंधी आँकड़ों की उपलब्धता और उनके स्रोतों और उनके आकलन की पद्धति की उचित समझ आवश्यक है।

चूँकि धारणीय और हरित अवसंरचना प्रौद्योगिकियाँ ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन की तीव्रता को कम करने या टालने में योगदान करती हैं, इसलिए वित्तपोषण संस्थाओं के लिए एक महत्वपूर्ण विचार ग्रीन वॉशिंग के जोखिमों का समाधान करना है। किसी भी परियोजना को वित्तपोषित करने के लिए, जिसका उद्देश्य ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन में कमी लाना है, किसी ऋणदाता के लिए यह स्पष्ट रूप से समझना आवश्यक है कि इन अनुमानित कटौतियों को कैसे परिमाणित किया जा रहा है। इसके लिए एक मज़बूत और स्वतंत्र निगरानी, रिपोर्टिंग और सत्यापन (एमआरवी) प्रणाली की भी आवश्यकता होगी। ऐसी अवसंरचना परियोजनाओं के लिए वित्तपोषण के अवसर बढ़ाने हेतु, ऐसे लाभों की जानकारी देने और उनका परिमाणीकरण करने हेतु मानकीकृत प्रक्रियाएँ और डेटाबेस आवश्यक होंगे।

धारणीय और हरित अवसंरचना परियोजनाओं से जुड़ी बाधाओं को दूर करने के लिए कई अवसंरचना या पारितंत्र को सक्षम बनाने वाले तत्वों को बढ़ावा देने और प्रोत्साहित करने की आवश्यकता है। प्रारंभिक चरण के जोखिमों को कम करने के लिए अभिनव वित्तीय साधनों के अभाव और मिश्रित वित्त के अवसरों की उपलब्धतता की कमी के कारण, कई परियोजनाओं में निजी पूंजी आकर्षित करने के लिए आवश्यक पैमाने या बैंकिंग क्षमता का अभाव है। उभरती बाजार अर्थव्यवस्थाओं के मामले में ये सीमाएँ और भी बढ़ जाती हैं क्योंकि अपर्याप्त वित्तीय साधन और खंडित संस्थागत समन्वय महत्वपूर्ण बाधाएँ हैं जो खराब संप्रभु रेटिंग से और भी बढ़ जाती हैं, जिससे जोखिम प्रीमियम में और वृद्धि होती है, खासकर जब वैश्विक निधियों तक पहुँचने का प्रयास किया जाता है। वैश्विक वित्तपोषण, जहाँ उपलब्ध है, मुख्यतः विदेशी मुद्राओं में अंकित लेकर आ है, जिससे उधारकर्ता विनिमय दर के जोखिमों के प्रति संवेदनशील होते हैं

और परिणामस्वरूप वित्तपोषण की लागत बढ़ जाती है - जबकि उन्हें कम लागत वाली निधियों तक पहुँचने की आवश्यकता होती है। इसके अलावा, वैश्विक स्तर पर जलवायु वित्त की उपलब्धता कई निधियों में फैली हुई है, जिनकी आवेदन प्रक्रियाएँ, पात्रता मानदंड और रिपोर्टिंग मानक अलग-अलग हैं, जिससे इस तरह के वित्तपोषण का प्रवाह सुनिश्चित करना कठिन और समय खपत वाला कार्य हो जाता है। ये कारक संस्थागत विरोधाभास को जन्म देते हैं जहाँ पूंजी स्थिरता चाहती है, जबकि पूंजी की मांग करनेवाली धारणीय आस्तियां इन निधियों तक उचित अनुपात में बढ़ने और उन तक पहुँचने में असमर्थ होती हैं।

धारणीय एवं हरित अवसंरचना के लिए वित्त को उत्प्रेरित करना

समस्याओं और चुनौतियों को देखते हुए, हमारा ध्यान अपनी अवसंरचना परिदृश्य को हरित एवं धारणीय विकास की ओर बदलने के लिए आवश्यक वित्तपोषण जुटाने के प्रभावी तरीकों की पहचान करने पर होना चाहिए। मैं आपके लिए विचार करने हेतु कुछ अवधारणाएँ प्रस्तुत करता हूँ। हरित एवं धारणीय अवसंरचना में आवश्यक प्रवाह को गति देने के लिए, हमें वित्तीय पारितंत्र के समग्र पुनर्गठन की आवश्यकता है - ऐसा पारितंत्र जो जोखिम को पुनर्व्यवस्थित करें, धारणीयता को संस्थापित करें और प्रोत्साहनों को संरेखित करें। हमें एक ऐसे आधारभूत दृष्टिकोण का पालन करने की आवश्यकता है जिसके तहत पारितंत्र के सक्षमकर्ताओं को पहले स्थापित किया जाए, उसके बाद उन्हें सभी क्षेत्रों में सुसंगत और तर्कसंगत बनाया जाए। हम इन सक्षमकर्ताओं को अंतर्जात और बहिर्जात सक्षमकर्ताओं के रूप में दो श्रेणियों में वर्गीकृत कर सकते हैं। अंतर्जात सक्षमकर्ता सूचना प्रवाह, डेटा अंतराल को पाटने, एमआरवी आवश्यकताओं और तकनीकी विशेषज्ञता के निर्माण की आवश्यकताओं को संदर्भित करते हैं। फिर वे ऋण प्रवाह की उपलब्धता और आवश्यकता के बीच मुख्य कड़ी के रूप में कार्य कर सकते हैं और धारणीय एवं हरित अवसंरचना परियोजनाओं से संबंधित वित्त के मूल्यांकन से लेकर संवितरण और निगरानी तक पूरे पारितंत्र को शामिल कर सकते हैं। ये सक्षमकर्ता वित्तीय प्रणाली को वित्तपोषण आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए तैयार करेंगे तथा अधिक निश्चितता के साथ धन के प्रवाह को सुगम बनाएंगे।

बहिर्जात सक्षमकर्ताओं में ऐसे तंत्र शामिल होंगे जो हरित और धारणीय अवसंरचना से जुड़े अंतर्निहित जोखिमों को पूरा करने के लिए बनाए जा सकें, जिनमें जोखिम पूँजी, प्रथम हानि चूक पूँजी, रियायती वित्तपोषण, वित्तपोषण की मात्रा, वैश्विक वित्तपोषण, सार्वजनिक और निजी पूँजी जुटाना शामिल हैं। मिश्रित वित्त, जो रियायती सार्वजनिक वित्त को निजी पूँजी के साथ जोड़ता है, हरित और धारणीय अवसंरचना की बैंकिंग क्षमता की कमी को पाटने के लिए आवश्यक है। सार्वजनिक और निजी वित्तपोषण के पर्याप्त मिश्रण की आवश्यकता है जहाँ सार्वजनिक निधि उचित प्रोत्साहन संरचना के माध्यम से निजी निधियों में समाहित हो। विशिष्ट तंत्रों को सक्षम करने की आवश्यकता है जहाँ वैश्विक निधियाँ परियोजना-स्तरीय समर्थन से लेकर बाजार-आकार देने वाले हस्तक्षेपों तक अपने अधिदेशों का विस्तार करें, साथ ही अनुकूलन अवसंरचना और प्रकृति-आधारित समाधान जैसे अविकसित क्षेत्रों को भी लक्षित करें। बहुपक्षीय विकास बैंकों (एमडीबी), विकास वित्तीय संस्थानों (डीएफआई), राष्ट्रीय विकास बैंकों (एनडीबी) और ऊर्ध्वाधर जलवायु एवं पर्यावरण निधियों (वीसीईएफ) की भी आवश्यकता है जिससे दृष्टिकोण और संचालन में सामंजस्य स्थापित किया जा सके और संयुक्त वित्तपोषण को सक्षम बनाया जा सके ताकि प्रत्यक्ष ऋणदाता से उत्प्रेरक भागीदार बनने में बदलाव लाया जा सके और धारणीय एवं हरित अवसंरचना परियोजनाओं के वित्तपोषण में बड़े पैमाने की किफायतें लाई जा सकें। प्रथम हानि गारंटी और अधीनस्थ ऋण जैसे उपकरण भी आवश्यक हैं, जो प्रारंभिक स्तर के निवेशों के जोखिम को कम कर सकते हैं और संस्थागत पूंजी जुटा सकते हैं।

किसी भी उद्देश्य के लिए वित्त की मापनीयता या तो नीतिगत प्रोत्साहनों से या बाजार तंत्र से आती है जो जोखिम लेने को पर्याप्त रूप से प्रोत्साहित करती हैं। एक बार अंतर्जात सक्षमकर्ता स्थापित हो जाने पर, बहिर्जात सक्षमकर्ताओं द्वारा समर्थित, नवीन वित्तीय साधन जैसे कि स्थिरता से जुड़े ऋण, संक्रमणकालीन वित्त साधन, हरित ऋण प्रतिभूतियाँ आदि, वित्त के प्रवाह को सक्षम करने के लिए आवश्यक गति प्राप्त कर सकते हैं। डिजिटल समाधान पारंपरिक वित्त के काम करने के तरीके को बदल रहे हैं और इस नवाचार को धारणीय और हरित अवसंरचना के लिए सही दिशा देने की आवश्यकता है। एमआरवी

आवश्यकताओं और डेटा व सूचना प्रवाह को स्वचालित करने के लिए डिजिटल उपकरण, अनुपालन लागत को काफी हद तक कम कर सकते हैं। मैं सभी तकनीकी उत्साही लोगों से इस संबंध में नवाचार करने और समाधान लाने का अनुरोध करता हूँ। वित्त में तकनीक-आधारित नवाचार को बढ़ावा देने के लिए, आरबीआई ने एक विनियामक सैंडबॉक्स स्थापित किया है जिसमें बाजार-व्यापी स्केलेबल समाधान प्रदान करने के लिए नवीन समाधानों का परीक्षण किया जा सकता है। आरबीआई ने विनियामक सैंडबॉक्स के तहत 'ऑन टैप' सुविधा के हिस्से के रूप में 'थीम न्यूट्रल' अनुप्रयोगों को भी अनुमति दी है, जिसके तहत धारणीय वित्त और जलवायु जोखिम शमन सहित विभिन्न विषयों के अंतर्गत किसी भी तकनीक/विषय को शामिल करने वाले अनुप्रयोग बनाए जा सकते हैं। टोकनीकरण जल्द ही अवसंरचना में आंशिक निवेश को सक्षम कर सकता है, जिससे नए चलनिधि माध्यम और निवेशक आधार खुल सकते हैं। धारणीय और हरित अवसंरचना के लिए इस दृष्टिकोण को तलाशने की आवश्यकता है। फिनटेक, ब्लॉकचेन और एआई में परियोजना सत्यापन को सुव्यवस्थित करने, पता लगाने की क्षमता में सुधार करने और हरित एवं धारणीय वित्त तक पहुँच को लोकतांत्रिक बनाने की क्षमता है। हमें विभिन्न क्षेत्रों और प्रदेशों में धारणीय और हरित परियोजनाओं की एक अवसंरचना पाइपलाइन, जाँची-परखी, निवेश के लिए तैयार परियोजनाओं का भंडार स्थापित करने के लिए इन प्रयासों का लाभ उठाना चाहिए। हमें स्थानीय सरकारों, स्वदेशी समुदायों और नागरिक समाज को भी जलवायु बुनियादी ढाँचे के प्रयासों का नेतृत्व करने के लिए सशक्त बनाना चाहिए। इसमें विकेंद्रीकृत नवीकरणीय ऊर्जा प्रणालियाँ, धारणीय भूमि उपयोग प्रथाएँ और समुदाय-आधारित अनुकूलन परियोजनाएँ शामिल हो सकती हैं।

कोई भी देश अकेले निवल-शून्य हासिल नहीं कर सकता। जलवायु परिवर्तन एक सर्वोत्कृष्ट वैश्विक चुनौती है और हमारी प्रतिक्रिया भी। इस संबंध में वैश्विक सहयोग बढ़ाने की आवश्यकता है, जिसे प्रौद्योगिकी हस्तांतरण, अनुसंधान एवं विकास वित्तपोषण और कौशल विकास तक भी विस्तारित किया जाना चाहिए ताकि बैंकिंग योग्य धारणीय और हरित अवसंरचना परियोजनाओं की पहचान, डिज़ाइन और संरचना के लिए तकनीकी विशेषज्ञता का विकास संभव हो सके। नीतिगत सुधारों, परियोजना पाइपलाइन के विकास और सुसंगत विनियामक ढांचे के साथ परियोजना-आधारित वित्त से समग्र बाजार विकास पर ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता है जो धारणीय और हरित अवसंरचना को बढ़ावा देने के लिए प्रणालीगत परिस्थितियों का निर्माण कर सके। अंतरराष्ट्रीय वित्तीय ढांचे को भी स्थायित्व की ओर पुनः उन्मुख करने की आवश्यकता धारणीय और हरित अवसंरचना का जोखिम-मुक्तीकरण तभी सबसे कारगर हो सकता है जब राष्ट्रीय, स्थानीय और बहुपक्षीय संस्थान मिलकर निवेश करें, जिससे नीतिगत विश्वसनीयता और तकनीकी मज़बूती का संकेत मिले। एमडीबी और वैश्विक जलवायु कोषों को अपने अनुशासन ढाँचे पर पुनर्विचार करना पड़ सकता है ताकि प्राप्तकर्ता देशों, विशेष रूप से वैश्विक दक्षिण, न कि केवल दाता देशों की आवाज़ प्रतिबिंबित हो। ऋण-के-लिए-जलवायु अदला-बदली और जलवायु-लचीले ऋण प्रावधानों जैसे नवोन्मेषी वित्तीय साधनों को भी हरित निवेश के लिए राजकोषीय गुंजाइश बनाने हेतु बढ़ाया जाना चाहिए। हम सभी को एक सुधारित, सशक्त और जलवायु-संरेखित बहुपक्षीय वित्तीय प्रणाली के निर्माण की दिशा में काम करने की आवश्यकता है।

निष्कर्ष - वित्तीय नेतृत्व - कार्रवाई का आह्वान

निवल-शून्य की ओर संक्रमण केवल वित्त के बारे में नहीं है, बल्कि ज्ञान, विश्वास और एकजुटता के बारे में भी है। हम एक चौराहे पर हैं या जलवायु के संदर्भ में एक निर्णायक बिंदु के करीब हैं। यह न केवल जलवायु नीति के लिए, बल्कि वित्तीय नेतृत्व के लिए भी एक साथ कार्य करने का समय है। एक धारणीय और हरित अवसंरचना सबसे अच्छी विरासत है जिसे हम आने वाली पीढ़ियों को दे सकते हैं। वित्तीय पेशेवरों और नेताओं के रूप में, हमें अंतर्जात और बहिर्जात सक्षमताओं को बढ़ावा देने और जलवायु वित्त को बढ़ाने हेतु एक मज़बूत पारितंत्र का निर्माण करने के लिए एकजुट होकर कार्य करने की आवश्यकता है ताकि हरित और धारणीय अवसंरचना को विवेकपूर्ण तरीके से उत्प्रेरित किया जा सके। हमें अपने जनादेशों और दृष्टिकोणों को देश के निवल-शून्य मार्गों के साथ संरेखित करने, नवाचार करने, रणनीति बनाने और वैश्विक स्तर पर सहयोग करने की आवश्यकता है, भले ही हम स्थानीय स्तर पर कार्य करें।

भारतीय रिज़र्व बैंक एक मज़बूत पारितंत्र के निर्माण को सुगम बनाने के अपने संकल्प में सक्रिय रहा है, जिसमें जलवायु परिवर्तन जोखिमों के आकलन और शमन को बढ़ावा दिया जाता है और अर्थव्यवस्था व वित्तीय प्रणाली पर इसके प्रभाव को कम किया जाता है। इस संदर्भ में, हमने एक बिल्डिंग ब्लॉक दृष्टिकोण अपनाया है, जो व्यापक हितधारक परामर्श, क्षमता विकास, हरित वित्त की ओर ऋण प्रवाह को दिशा देने, जलवायु डेटा अंतराल और मॉडलिंग चुनौतियों जैसी सीमाओं को पाटने के प्रयासों और अनुपालन व आचरण में संतुलन स्थापित करते हुए जोखिम मूल्यांकन हेतु एक अनुकूल विनियामक ढाँचे के निर्माण पर केंद्रित है।

हमें भविष्य की आवश्यकताओं के वित्तपोषण के लिए साहसिक और तत्काल कार्रवाई की आवश्यकता है। हमें उस पूंजी को उत्प्रेरित करने की आवश्यकता है जो उस विश्व के निर्माण में सहायक हो जिसकी हमें आवश्यकता है। धारणीय और हरित अवसंरचना जलवायु कार्रवाई, आर्थिक लचीलेपन और सामाजिक न्याय की नींव है। यह हमारे लिए निवल-शून्य लक्ष्यों को प्राप्त करने, अपने समुदायों की रक्षा करने और एक अधिक न्यायसंगत विश्व बनाने के लिए एक महत्वपूर्ण उत्प्रेरक है। भविष्य का निर्माण हो चुका है और किसी न किसी रूप में इसका निर्माण होता रहेगा। प्रश्न यह है: क्या यह धारणीय होगा? और हम इसे सुनिश्चित करने के लिए क्या कर सकते हैं?

मैं इन्हीं विचारों के साथ आपसे विदा लेता हूँ और इन बैठकों के दौरान आप सभी के सफल विचार-विमर्श और फलदायी परिणामों की कामना करता हूँ।

धन्यवाद ।